क्रोयडन, लण्डन
मई १४, २००७

सन्देश संख्या ११८

रूस में रिट्रीट
(२४–२६ अप्रील २००७)

उद्घाटन सत्र के समय शिवेन्दु की चेतना में एक गहरा खालीपन था और वह अत्यन्त स्थिर था । शिवेन्दु पूर्ण शून्यता में था और बोलना प्रारम्भ करने के लिए उसके पास कोई विषय नहीं था । उसमें केवल स्नेह का विराट भाव था जो किसी वस्तु या किसी व्यक्ति के लिए नहीं था वरन् उसे 'प्रेम' की परिपूर्णता कहा जा सकता है । दुर्भाग्यवश हम लोगों ने इस प्रेम शब्द को बिगाड़ दिया है और इसमें अपनी संकुचित एवं क्षुद्र मानसिकता के अर्थहीन अर्थ को आरोपित कर दिया है और इसी कारण हमलोग बार–बार अपनी प्रतिदिन की भ्रांति और दुर्गति की ओर लौटते हैं । किन्तु वहाँ रिट्रीट में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति में शुद्ध प्रेम था । वहाँ रूमानी कुछ भी नहीं था और न ही उसकी बुद्धिसंगत शाब्दिक अभिव्यक्ति थी । वहाँ केवल प्रेम था और समझदारी की ऊर्जा थी, ठीक उसी तरह जैसे सभागार में मेज–कुर्सियाँ थीं । रिट्रीट के इस प्रेम की सुन्दरता का एक कट्टर धार्मिक सभा के तथाकथित 'सम्मान' से कुछ लेना–देना नहीं था । उस सभागार में कोई भी सुसंस्कृत या संस्कारहीन अभिमानी नहीं था । सभागार में चारों तरफ के वृक्षों से प्रेम की तरंगें आ रही थीं, और वहाँ आशीर्वाद की वर्षा हो रही थी ।

शिवेन्दु खालीपन में था, इसीलिए उसने श्रोताओं से ही पूछा कि वे इस रिट्रीट में क्यों आये हैं । रिट्रीट में भाग लेने वालों के उत्तर और उस पर शिवेन्दु की टिप्पणी नीचे दी जा रही है :–

उत्तर १ : मैं यहाँ ऊर्जा के संचय के लिए आया हूँ । पिछले रिट्रीटों में सचमुच ही बहुत ऊर्जा उत्पन्न हुई थी ।

टिप्पणी : यथार्थ को देखने हेतु अर्थात् 'जो है' को देखने हेतु ऊर्जा का संचय ही धर्म है । जिसे हम यथार्थतः नहीं जानते उसे ही धर्म के नाम पर जानने का पाखण्ड करते हैं । ऐसे पाखण्डों का उदय पहले के अनुबन्धनों एवं उधारी विश्वासों से निर्मित दबावों एवं पूर्वाग्रहों से होता है । हमलोग 'ऐसा होना चाहिए' की काल्पनिक सुरक्षा की खोज में ही अपनी ऊर्जा न करते रहते हैं । सच्चे अर्थों में धार्मिक होने के कारण, आपका यहाँ हार्दिक स्वागत है ।

उत्तर २ : ''मैं'' की गतिविधियाँ अन्त में सदा ही असीम दुःख का कारण बनती हैं । शायद यहाँ ''मैं'' की गतिविधियों की और अधिक समझदारी हो सकेगी। पिछले रिट्रीटों में निश्चित रूप से यह समझदारी बढ़ी थी ।

टिप्पणी : मानवीय चित्तवृत्ति विभिन्न जानकारियों के विखण्डनों से परिपूर्ण है । विखण्डनों के इस क्षेत्र से ''मैं'' का मिथ्या अलगाव ही सभी द्वन्द्वों एवं दुःखों की जननी है । किन्तु सजगता की अग्नि को धारण करना सम्भव है। मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे छिपे ''मैं'' की स्वपोषी गतिविधि सजगता की उस अग्नि में जल जाती है और तभी प्रज्ञा और अन्तर्दृष्टि का प्रकाशन होता है।

उत्तर ३ : पिछले रिट्रीट में विस्फोट की अनुभूति हुई थी । ''मैं'' के बोझ से मुक्ति का यह स्वाद बार–बार हो । उसी के लिए मैं यहाँ आया हूँ ।

टिप्पणी : स्मृति में तथ्यात्मक पंजीकरण कोई बोझ या बन्धन नहीं बनाते । किन्तु तथ्यात्मक पंजीकरण के साथ–साथ होने वाले मानसिक पंजीकरण और उनके अवशेष एवं अवसाद ही बन्धन और बोझ उत्पन्न करते हैं ।

उत्तर ४ : दूसरे क्रियावानों की सद् संगति में रहने से मेरे अन्दर भी सजगता की अग्नि प्रज्वलित होती है ।

टिप्पणी : यह संवहन की प्रक्रिया द्वारा निश्चय ही घटित होती है । रिट्रीट में चैतन्य का जागरण होता है बशर्ते कि कोई जड़ मूर्ख न हो ।

उत्तर ५ : रिट्रीट में क्रिया अभ्यास की समझदारी बढ़ती है ।

टिप्पणी : क्या क्रिया–अभ्यास में अकर्त्ताभाव हो सकता है? यह अकर्त्ताभाव अकमण्यता नहीं है, यह वस्तुतः एक महान कृपा है । वैसी अवस्था में क्रिया–अभ्यास से चेतना में मौलिक परिवर्तन की गहरी अनुभूति होती है ।

उत्तर ६ : रिट्रीट हमें अपने दैनिक क्रिया–कलापों को देखने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है ।

टिप्पणी : यह कथन दर्शाता है कि प्रेक्षक और प्रेक्षित के मध्य विलय घटित हो चुका है ।

उत्तर ७ : रिट्रीट में मुझे अपने आध्यात्मिक पिता से पुनः एक बार मिलकर आनन्द होता है ।

टिप्पणी : जन्मदाता पिता के अतिरिक्त आध्यात्मिक पिता का होना अच्छी बात है ।

उत्तर ८ : रिट्रीट में मैं निर्मन की झलक का आनन्द लेता हूँ ।

टिप्पणी : यह 'निर्मन' तनिक भी मन के विपरीत नहीं है । यह मनुष्य की उत्तेजना की समाप्ति है ।

उत्तर ९ : रिट्रीट में बन्धनों से मुक्ति मिलती है । क्रियायोग से सर्व–मंगल की भावना आती है ।

टिप्पणी : क्रियायोग अनुबन्धनों तथा गुणों से मुक्ति का विज्ञान है ।

उत्तर १० : रिट्रीटों में मुझे शर्तरहित प्रेम की अनुभूति होती है ।

टिप्पणी : रिट्रीटों में सच्चे अर्थों में प्रेम की तरंगें प्रवाहित होती हैं । वह पुरोहितों का उनके तथाकथित ईश्वर के प्रति कृत्रिम प्रेम नहीं है और न ही राजनीतिज्ञों जैसा शब्दों के साथ बाजीगरी है ।

उत्तर ११ : रिट्रीटों में एक आलोक उत्पन्न होता है जो अंधविश्वासों तथा विश्वास पद्धतियों पर निर्भरता के अन्धकार को नष्ट कर देता है ।

टिप्पणी : व्यक्ति शायद स्वयं का आलोक स्वयं हो जाता है ।

उत्तर १२ : मैं यहाँ उच्च क्रिया दीक्षा हेतु आया हूँ । मैंने आवश्यक सभी क्रियाओं को पूरा कर लिया है और अब उच्चक्रिया के लिए उपलब्ध हूँ ।

टिप्पणी : आपका हार्दिक स्वागत है ।

उत्तर १३ : यह विस्मयकारी है कि स्याटीका दर्द से आपका शरीर पीड़ित है फिर भी कोई दर्द का भोक्ता दिखाई नहीं पड़ता । यह हमलोगों के लिए एक पहेली है ।

टिप्पणी : ईश्वर को उनकी कृपा के लिए धन्यवाद है ।

उत्तर १४ : रिट्रीट में मैं अपनी यात्रा मानसिक अवधारणाओं से आरम्भ करता हूँ और फिर गहरी समझदारी की अवस्था में पहुँच जाता हूँ जिसका कोई अनुभव नहीं होता ।

टिप्पणी : यह यात्रा कुछ बनने की प्रक्रिया नहीं है । यह अस्तित्वमय जीवन की स्वतंत्रता है ।

रूस के क्रियावानों ने इस वर्ष निर्णय किया है कि अगले वर्ष का दीक्षा–कार्यक्रम एवं रिट्रीट विशाल एवं गहरे वोल्गा नदी में तथा रूस की समुद्री सीमा वाले कैस्पीयन सागर में एक गतिमान जलयान में किया जाएगा । यह १० से ३० जून २००८ के मध्य दस दिनों का जल पर निवास होगा । आने वाले समय में निश्चित तिथि तय कर ली जाएगी । वे इसे अन्तरराष्ट्रीय रिट्रीट करना चाहते हैं और इसीलिए वे उन सभी गुरूभाइयों को निमन्त्रण देंगे जो भाग लेने में समर्थ हों । रूस के वंश–परम्परा वाले क्रियावानों को उत्साह तथा सफलता की शुभकामनाएँ ।

।। रूस में तथा सर्वत्र, मानवता की जय हो ।।